Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

UG. Sem – II
MJC – 2 : Scientific Method

सादृश्यानुमान का स्वरूप
(Nature of Inference or Argument from Analogy)

दो वस्तुओं में कुछ गुणों की समानता (Similarity) को देखकर यदि हम किसी अन्य गुणों में भी समान होने का अनुमान करें तो उसे सादृश्यानुमान (Inference from analogy) कहते हैं। यहाँ दो वस्तुएँ कुछ गुणों में मिलती-जुलती हैं। लेकिन ऐसी मिलने-जुलने या सादृश्य या समानता (Similarity or resemblance) के आधार पर अनुमान किया जाता है कि वे किसी और गुणों में भी मिलेंगी। ऐसे अनुमान के सत्य होने की संभावना होती है, वे अनिवार्यतः सत्य नहीं होते हैं। एक-दो उदाहरण से सादृश्यानुमान के स्वरूप का स्पष्टीकरण होगा।

1. सांकेतिक उदाहरण

मान लीजिए कि 'क' में य र ल व श ष स इत्यादि गुण हैं। 'ख' में भी 'य', र, ल, व श, इत्यादि गुण हैं। इसलिए 'क' और 'ख' में य, र, ल, व, श, इत्यादि गुणों को लेकर समानता या सादृश्य (Similarity or resemblance) है। अब यदि 'क' में एक नया गुण 'ह' देखने को मिलता है, तो अनुमान होगा कि 'ख' में भी 'ह' गुण होगा। यह नया

AUGUST 2013
WK MO TU WE TH FR SA SU
31 1 2 3 4
32 5 6 7 8 9 10 11

पृथ्वी के और, स्व कुछ बातों में पहले से मिलते हैं, इसलिए अनुमान होगा कि ग अन्य बातों (जैसे 'ह') में भी मिलेंगे।

2. वास्तविक उदाहरण

पृथ्वी एक ग्रह है, जिसमें हवा है, ताप है, जल है, थल है, प्रकाश है और सूर्य के चारों तरफ परिक्रमा करने का गुण आदि है। मंगल (Mars) भी एक ग्रह है, जिसमें हवा है, ताप है, जल है, प्रकाश है और सूर्य के चारों तरफ परिक्रमा करने का गुण है आदि। इस तरह दोनों में अनेक बातों में समानता है। पृथ्वी में एक और गुण देखने को मिलता है कि यहाँ जीव रहते हैं। इसलिए उपर्युक्त समानता के आधार पर अनुमान किया जाता है कि मंगल (Mars) में भी जीव होंगे।

उपर्युक्त उदाहरणों को ध्यान में रखकर सादृश्यानुमान की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है—

सादृश्यानुमान अवैज्ञानिक आगमन (Inductions Proper) का वह भेद है जिसमें आंशिक सादृश्य या समानता (Imperfect Similarity) के आधार पर एक विशेष से दूसरे विशेष के प्रति सम्भव निष्कर्ष निकाले। इस परिभाषा से सादृश्यानुमान के स्वरूप (Nature) के बारे में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं—

1. सादृश्यानुमान एक प्रकार का अनुमान है। यहाँ ज्ञात के आधार पर अज्ञात का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। ज्ञात के बल पर अज्ञात का ज्ञान हासिल करना अनुमान कहलाता है। पृथ्वी और मंगल की ज्ञात समानता के बल पर अज्ञात बात कि मंगल में भी जीव होंगे इसका ज्ञान हासिल किया जाता है।

2. यह आगमनात्मक अनुमान (Inductive inference) है। इसका निष्कर्ष निरीक्षण (observation) और प्रयोग experiment) पर आधारित होता है। पृथ्वी और मंगल की समानता (similarity) का निरीक्षण होता है और इसी निरीक्षण के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है कि 'मंगल में जीव होंगे'। निरीक्षण के द्वारा निकाले गये निष्कर्ष को आगमनात्मक अनुमान कहते हैं।

3. यह अवैज्ञानिक आगमन (induction proper) का एक भेद है। अवैज्ञानिक आगमन में अज्ञात की ओर छलांग (leap) ली जाती है। ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना, अवैज्ञानिक आगमन का लक्षण होता है। चूँकि यहाँ ज्ञात बातों की समानता के आधार पर अज्ञात बात की समानता का अनुमान किया जाता है, इसलिए यहाँ छलांग होती है, जिस कारण इसे अवैज्ञानिक आगमन कहते हैं।

AUGUST 2013

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	-

4. यहाँ अनुमान करने का आधार आंशिक सादृश्य या समानता (imperfect similarity) होती है। यानी जब दो वस्तुएँ आंशिक बातों में यानी कुछ बातों में समानता रखती हैं, तब अनुमान करना सम्भव होता है। मंगल में जीव होने का अनुमान इसलिए सम्भव होता है क्योंकि मंगल और पृथ्वी में कुछ बातों की समानता होती है। इसलिए सादृश्य या समानता (resemblance or similarity) अनुमान का आधार होता है।

~~[illegible]~~

5. जिस सादृश्य या समानता के आधार पर अनुमान किया जाता है, वह अपूर्ण सादृश्य या समानता होती है (imperfect)। इसको अपूर्ण सादृश्य या समानता इसलिए कहते हैं क्योंकि इसमें और अनुमानित समानता में कारण-कार्य सम्बन्ध का पता नहीं रहता है। पृथ्वी और मंगल की ज्ञात समानताएँ हवा का होना, ताप का होना, जल का होना, थल का होना, प्रकाश का होना आदि हैं। इन दोनों के बीच

JUNE 2013

WK	MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
22						1	2
23	3	4	5	6	7	8	9
24	10	11	12	13	14	15	16
25	17	18	19	20	21	22	23
26	24	25	26	27	28	29	30

अनुमानित समानता जीव का होना है। जैसे हवा, ताप, जल, प्रकाश आदि की। जीव के होने के साथ कारण-कार्य का सम्बन्ध है या नहीं। इसका पता नहीं रहता है। हमलोग नहीं जानते हैं कि हवा, ताप, जल, प्रकाश आदि जीव के 'होने' के 'कारण' हैं या नहीं। इसलिए सादृश्यमान में समान गुण (common property) और अनुमानित गुण (inferred property) में कारण-कार्य सम्बन्ध का ज्ञान नहीं रहता है। इनमें कारण-कार्य सम्बन्ध हो भी सकता है और नहीं भी।

6. सादृश्यमान में विशेष (Particular) का निरीक्षण करके विशेष (Particular) के बारे में अनुमान किया जाता है - यानी निष्कर्ष विशेष के सम्बन्ध में होता है। पृथ्वी और मंगल जो विशेष ग्रह (Particular planets) हैं, उनकी समानता का निरीक्षण किया जाता है। उसके बाद पुनः एक विशेष ग्रह (Particular planet) मंगल के बारे में अनुमान किया जाता है कि वहाँ जीव होते हैं। कहने का अर्थ है कि यहाँ विशेष से विशेष पर आया जाता है कि वहाँ जीव होते हैं। कहने का अर्थ है कि यहाँ विशेष से विशेष पर आया जाता है, यानी निष्कर्ष विशेष वस्तु के सम्बन्ध में होता है।

7. सादृश्यमान का निष्कर्ष निश्चित नहीं बल्कि संभाव्य (Probabl)

AUGUST 2013
WK MO TU WE TH FR SA SU
31 1 2 3 4
32 5 6 7 8 9 10 11
33 12 13 14 15 16 17 18
34 19 20 21 22 23 24 25
35 26 27 28 29 30 31 -
AUGUST

~~होता है। इसके निष्कर्ष~~ के सत्य होने की केवल सम्भावना (Possibility) रहती है, इसको अनिवार्यतः सत्य नहीं कह सकते हैं। यह जरूरी नहीं है कि मंगल में जीव है। हमलोगों का निष्कर्ष कि 'मंगल में भी जीव होगा' सत्य हो सकता है या नहीं भी हो सकता है। इसलिए अनुमान के निष्कर्ष के सत्य होने का अनुमान है, उसकी सिर्फ संभावना रहती है। निष्कर्ष में निश्चयात्मकता (Certainty) नहीं होती है, क्योंकि यहाँ समान गुण (Common property) और अनुमानित गुण (inferred property) में कारण कार्य सम्बन्ध का पता नहीं रहता है। यदि यह पता चल जाय कि हवा, ताप, जल, थल, प्रकाश आदि जीव होने के कारण हैं तो हमलोगों का निष्कर्ष कि मंगल में भी जीव होंगे अनिवार्यतः सत्य होगा। किन्तु, चूँकि यहाँ कारण-कार्य सम्बन्ध का ज्ञान नहीं रहता है इसलिए निष्कर्ष को संभव मान लेना ही उचित है।